Feel, Imagine, Think

Kudrat ka imtehaan [Hindi]

Juhi Mukesh Atlani

BCom student, SPB English Medium College Of Commerce, Surat

Corresponding Author:
Juhi Mukesh Atlani
Surat, Gujarat
Email: juhiatlani08 at gmail dot com

Received: 29-JUL-2020 Accepted: 31-JUL-2020 Published: 12-AUG-2020

Artwork credit:
Haryax Pathak, MBBS
Former Intern
Pramukh Swami Medical College,
Karamsad, Gujarat

हो गए हैं कैद हम घरों में ,
जैसे चिड़िया को रखा गया हो पिंजरों में ।
अपनी मर्ज़ी के मालिक भी अब किसी और की बात सुनने लगे हैं ।
जो कहते थे हम किसी से नहीं डरते वह भी अब डरने लगे हैं ।
वाहनो से अधिक, पंछियों की गुनगुनाहट सुनाई दे री है,
मानो आपस में कह रही हों –
"क्या उड़ते–उड़ते हम स्वर्ग आ गए हैं ?
जहां ना कोई शोर है ना कोई शूटर का डर ।"

हर बार ईश्वर से अपनी व्यस्त जीवन से
आराम मांगने वाले इंसान ने, यह ना सोचा होगा
आराम मिलेगा तो इस तरह का मिलेगा ।
ज़िन्दगी गुमसुम सी हो गई है मानो हम से कह रही हो –
"अब नहीं सुधरोगे तो कब सुधरोगे ? "
जो वैज्ञानिक कहेते थे, सब कुछ विज्ञान है ,
आज वही विज्ञान कोरोना की दवा नहीं खोज पा रहा है ।

वक्त का पहिया कुछ ऐसे घूमा कि
हम रुक गए और वक्त चलता रहा ।
कुदरत का ऐसा खेल कभी पहले नहीं देखा ।
जो पहले कभी नहीं हुआ वो अब हो रहा है,
चिड़िया और जानवरों को कैद करने वाला इंसान आज खुद कैद हो गया है ।
मानो कुदरत ने हमें दूसरा मौका दिया हो –
"सुधरने का ।"

Cite this article as: Atlani JM. Kudrat ka imtehaan [Hindi]. RHiME. 2020;7:186.